

جسٹیم بکسٹو اردو بازار جامع مسجد دیوبند

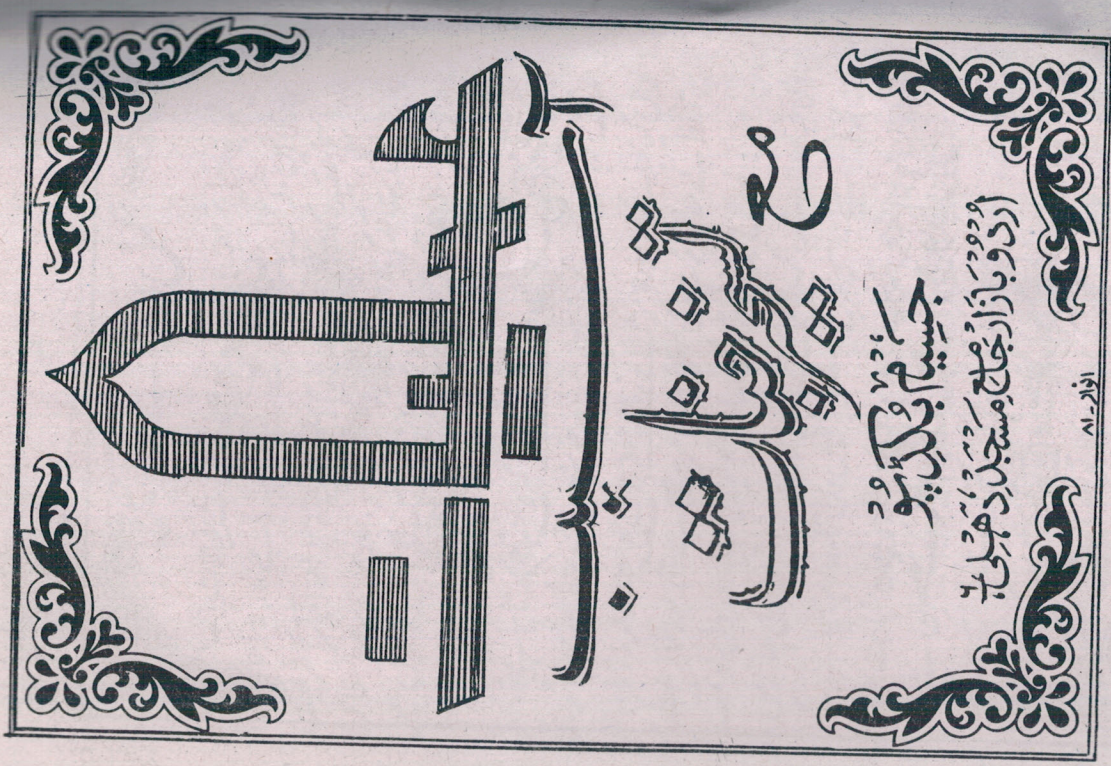
تسخیرِ جانا



آستان

عملا

عملیات کی بے نظیر کیت ابیں



الخوار - ۸۱

اردو بازار جامع مسجد دہلی
جسیم بیک پو

عمل ابراے تسخیر جن

عمل مجورہ مثل شریف :- سب سے پہلے عامل کے خیالات پاک و صاف ہونے ضروری ہیں۔ کہ عمل ایک مقصد کے لئے کیا جا رہا ہے اور یہ کہ عامل صاف ہمت اور راسخ عقیدہ کا مالک ہو۔ اور صوم و صلاۃ کا پابند ہو اور اتباع شریعت میں پوری طرح ثابت قدم ہو اور کسی آزار کا مریض نہ ہو۔ اور جلدی ہر اس میں ہونے والا نہ ہو۔ اور خاموشی طوریہ دل کا مریض نہ ہو کیونکہ ایسے کاموں میں ڈر اور خوف کا دل میں ذرا بھی شائبہ نہیں پیدا ہونا چاہیئے۔

عمل کے طریقے :- کسی ایک و صاف جگہ پر یا کیرہ مصلّا بچھانا چاہیئے۔ اور ایک صاف لباس زیب تن کیا جائے اور خوشبو یا ت مثلاً عطر عود اگر بتی کا استعمال کیا جائے۔ سورہ قمر کی آیت باری حفظ ہو تو اچھا ہے وگرنہ نافرہ بالکل درست تلفظ کے ساتھ پڑھنے کی مشق ہوئی ضروری ہے اور بعد نماز عشاء اپنے گرد سورہ اخلاص تین بار پڑھ کر صفا پیچ لینا چاہیئے اور دل کو متسام دنیاوی خیالات سے پاک و صاف کر کے سورہ قمر کی شریف کی چالیس بار تلاوت کرنی چاہیئے۔ اسی طرح یہ سلسلہ چالیس دن تک رہنا چاہیئے۔ عمل کے دوران کوئی انسان قریب نہ ہونا چاہیئے۔ چالیس دن نہایت بھیاں تکلوں والے چند انسان قریب آئیں گے۔ عامل کو قطعی ان سے دور نا نہیں چاہیئے۔ وہ اگر پیچے تو طرح طرح کی حرکتوں سے ڈرائیں گے۔ مگر عامل کو قطعی ان سے نہ ڈرنا چاہیئے۔ وہ کچھ نہ کر سکیں گے، البتہ خوف پیدا ہو گیا اور عامل صفا چھوڑ کر بھٹا نکلا تو نقصان پہنچ سکتا ہے۔ اب

جملہ حقوق محفوظ ہیں



بار اول ————— ۱۹۸۸

مرتبہ ————— الفلاح حسن خاں شتر

قیمت —————

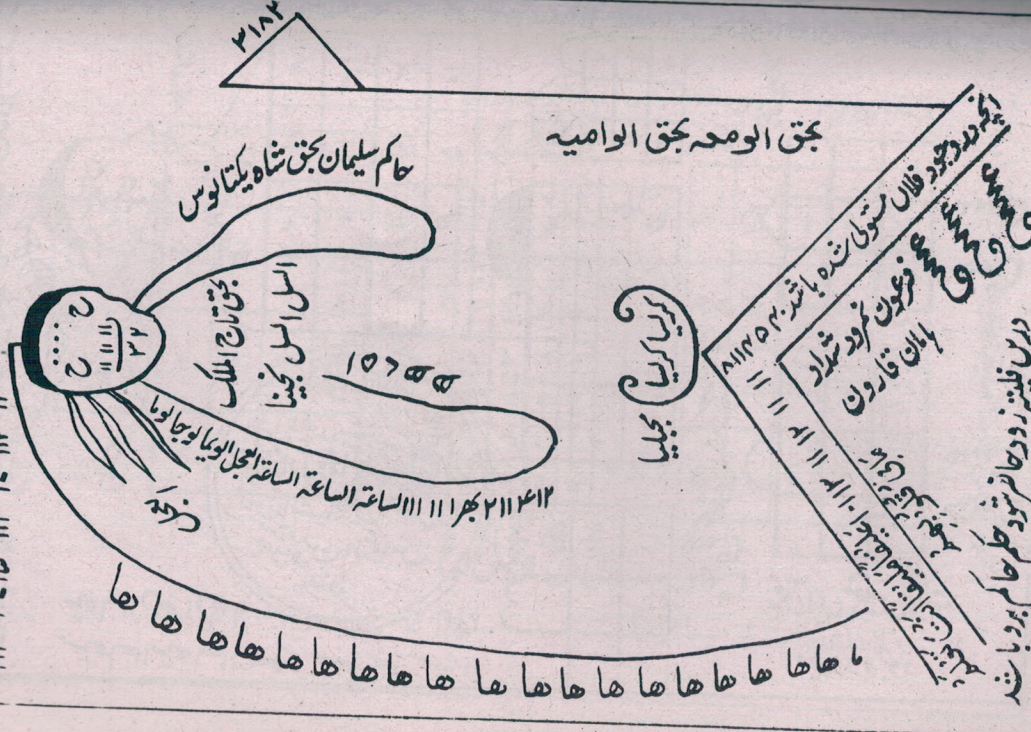
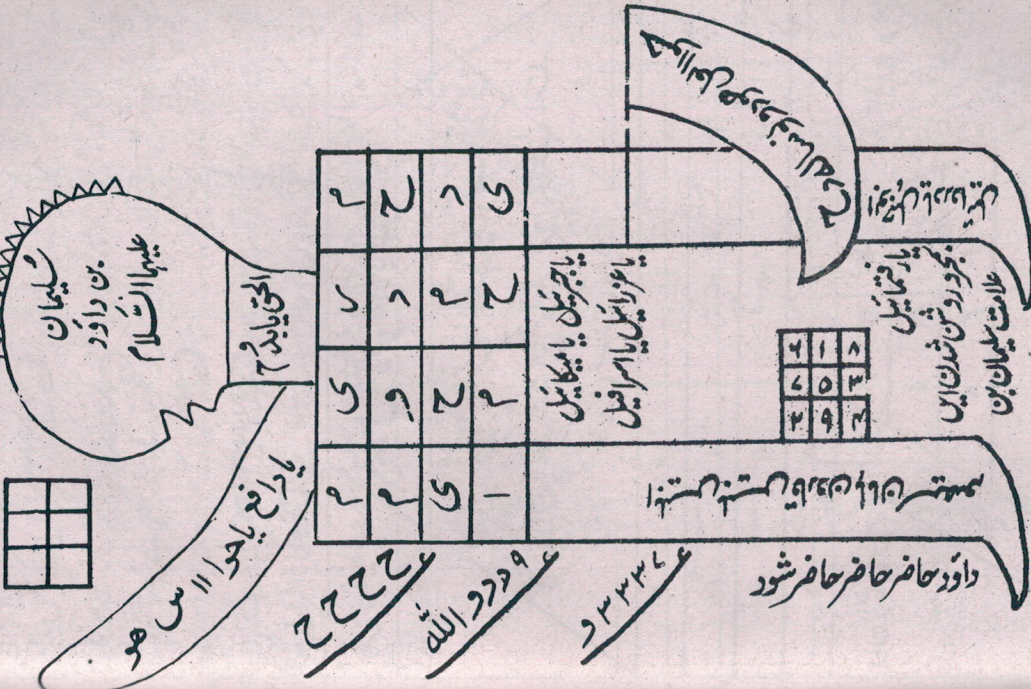
پبلشرز


جسٹیم بکسٹو، اردو بازار

جلال مسجد دھلا

ملحق صاحب تجربہ اس حاضرات کے پیر صاحب پور سے حاکم ہیں اور اپنی ہر بانی سے اس کتب کو بخشد یا ہے اور اکثر میرے تجربہ میں آیا ہے کہ اول اس نقش کو جسے چراغ میں لکھے اس کے بعد فلیتہ کر جو اس کے ساتھ ہے لکھے اور نقش چراغ کا یہ ہے۔

۳۳۹	۳۴۳	۳۴۴	۳۴۵	۳۴۶	۳۴۷	۳۴۸	۳۴۹	۳۵۰	۳۵۱	۳۵۲	۳۵۳	۳۵۴	۳۵۵	۳۵۶	۳۵۷	۳۵۸	۳۵۹	۳۶۰	۳۶۱	۳۶۲	۳۶۳	۳۶۴	۳۶۵	۳۶۶	۳۶۷	۳۶۸	۳۶۹	۳۷۰	۳۷۱	۳۷۲	۳۷۳	۳۷۴	۳۷۵	۳۷۶	۳۷۷	۳۷۸	۳۷۹	۳۸۰	۳۸۱	۳۸۲	۳۸۳	۳۸۴	۳۸۵	۳۸۶	۳۸۷	۳۸۸	۳۸۹	۳۹۰	۳۹۱	۳۹۲	۳۹۳	۳۹۴	۳۹۵	۳۹۶	۳۹۷	۳۹۸	۳۹۹	۴۰۰	۴۰۱	۴۰۲	۴۰۳	۴۰۴	۴۰۵	۴۰۶	۴۰۷	۴۰۸	۴۰۹	۴۱۰	۴۱۱	۴۱۲	۴۱۳	۴۱۴	۴۱۵	۴۱۶	۴۱۷	۴۱۸	۴۱۹	۴۲۰	۴۲۱	۴۲۲	۴۲۳	۴۲۴	۴۲۵	۴۲۶	۴۲۷	۴۲۸	۴۲۹	۴۳۰	۴۳۱	۴۳۲	۴۳۳	۴۳۴	۴۳۵	۴۳۶	۴۳۷	۴۳۸	۴۳۹	۴۴۰	۴۴۱	۴۴۲	۴۴۳	۴۴۴	۴۴۵	۴۴۶	۴۴۷	۴۴۸	۴۴۹	۴۵۰	۴۵۱	۴۵۲	۴۵۳	۴۵۴	۴۵۵	۴۵۶	۴۵۷	۴۵۸	۴۵۹	۴۶۰	۴۶۱	۴۶۲	۴۶۳	۴۶۴	۴۶۵	۴۶۶	۴۶۷	۴۶۸	۴۶۹	۴۷۰	۴۷۱	۴۷۲	۴۷۳	۴۷۴	۴۷۵	۴۷۶	۴۷۷	۴۷۸	۴۷۹	۴۸۰	۴۸۱	۴۸۲	۴۸۳	۴۸۴	۴۸۵	۴۸۶	۴۸۷	۴۸۸	۴۸۹	۴۹۰	۴۹۱	۴۹۲	۴۹۳	۴۹۴	۴۹۵	۴۹۶	۴۹۷	۴۹۸	۴۹۹	۵۰۰	۵۰۱	۵۰۲	۵۰۳	۵۰۴	۵۰۵	۵۰۶	۵۰۷	۵۰۸	۵۰۹	۵۱۰	۵۱۱	۵۱۲	۵۱۳	۵۱۴	۵۱۵	۵۱۶	۵۱۷	۵۱۸	۵۱۹	۵۲۰	۵۲۱	۵۲۲	۵۲۳	۵۲۴	۵۲۵	۵۲۶	۵۲۷	۵۲۸	۵۲۹	۵۳۰	۵۳۱	۵۳۲	۵۳۳	۵۳۴	۵۳۵	۵۳۶	۵۳۷	۵۳۸	۵۳۹	۵۴۰	۵۴۱	۵۴۲	۵۴۳	۵۴۴	۵۴۵	۵۴۶	۵۴۷	۵۴۸	۵۴۹	۵۵۰	۵۵۱	۵۵۲	۵۵۳	۵۵۴	۵۵۵	۵۵۶	۵۵۷	۵۵۸	۵۵۹	۵۶۰	۵۶۱	۵۶۲	۵۶۳	۵۶۴	۵۶۵	۵۶۶	۵۶۷	۵۶۸	۵۶۹	۵۷۰	۵۷۱	۵۷۲	۵۷۳	۵۷۴	۵۷۵	۵۷۶	۵۷۷	۵۷۸	۵۷۹	۵۸۰	۵۸۱	۵۸۲	۵۸۳	۵۸۴	۵۸۵	۵۸۶	۵۸۷	۵۸۸	۵۸۹	۵۹۰	۵۹۱	۵۹۲	۵۹۳	۵۹۴	۵۹۵	۵۹۶	۵۹۷	۵۹۸	۵۹۹	۶۰۰	۶۰۱	۶۰۲	۶۰۳	۶۰۴	۶۰۵	۶۰۶	۶۰۷	۶۰۸	۶۰۹	۶۱۰	۶۱۱	۶۱۲	۶۱۳	۶۱۴	۶۱۵	۶۱۶	۶۱۷	۶۱۸	۶۱۹	۶۲۰	۶۲۱	۶۲۲	۶۲۳	۶۲۴	۶۲۵	۶۲۶	۶۲۷	۶۲۸	۶۲۹	۶۳۰	۶۳۱	۶۳۲	۶۳۳	۶۳۴	۶۳۵	۶۳۶	۶۳۷	۶۳۸	۶۳۹	۶۴۰	۶۴۱	۶۴۲	۶۴۳	۶۴۴	۶۴۵	۶۴۶	۶۴۷	۶۴۸	۶۴۹	۶۵۰	۶۵۱	۶۵۲	۶۵۳	۶۵۴	۶۵۵	۶۵۶	۶۵۷	۶۵۸	۶۵۹	۶۶۰	۶۶۱	۶۶۲	۶۶۳	۶۶۴	۶۶۵	۶۶۶	۶۶۷	۶۶۸	۶۶۹	۶۷۰	۶۷۱	۶۷۲	۶۷۳	۶۷۴	۶۷۵	۶۷۶	۶۷۷	۶۷۸	۶۷۹	۶۸۰	۶۸۱	۶۸۲	۶۸۳	۶۸۴	۶۸۵	۶۸۶	۶۸۷	۶۸۸	۶۸۹	۶۹۰	۶۹۱	۶۹۲	۶۹۳	۶۹۴	۶۹۵	۶۹۶	۶۹۷	۶۹۸	۶۹۹	۷۰۰	۷۰۱	۷۰۲	۷۰۳	۷۰۴	۷۰۵	۷۰۶	۷۰۷	۷۰۸	۷۰۹	۷۱۰	۷۱۱	۷۱۲	۷۱۳	۷۱۴	۷۱۵	۷۱۶	۷۱۷	۷۱۸	۷۱۹	۷۲۰	۷۲۱	۷۲۲	۷۲۳	۷۲۴	۷۲۵	۷۲۶	۷۲۷	۷۲۸	۷۲۹	۷۳۰	۷۳۱	۷۳۲	۷۳۳	۷۳۴	۷۳۵	۷۳۶	۷۳۷	۷۳۸	۷۳۹	۷۴۰	۷۴۱	۷۴۲	۷۴۳	۷۴۴	۷۴۵	۷۴۶	۷۴۷	۷۴۸	۷۴۹	۷۵۰	۷۵۱	۷۵۲	۷۵۳	۷۵۴	۷۵۵	۷۵۶	۷۵۷	۷۵۸	۷۵۹	۷۶۰	۷۶۱	۷۶۲	۷۶۳	۷۶۴	۷۶۵	۷۶۶	۷۶۷	۷۶۸	۷۶۹	۷۷۰	۷۷۱	۷۷۲	۷۷۳	۷۷۴	۷۷۵	۷۷۶	۷۷۷	۷۷۸	۷۷۹	۷۸۰	۷۸۱	۷۸۲	۷۸۳	۷۸۴	۷۸۵	۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰	۱۰۰۱	۱۰۰۲	۱۰۰۳	۱۰۰۴	۱۰۰۵	۱۰۰۶	۱۰۰۷	۱۰۰۸	۱۰۰۹	۱۰۱۰	۱۰۱۱	۱۰۱۲	۱۰۱۳	۱۰۱۴	۱۰۱۵	۱۰۱۶	۱۰۱۷	۱۰۱۸	۱۰۱۹	۱۰۲۰	۱۰۲۱	۱۰۲۲	۱۰۲۳	۱۰۲۴	۱۰۲۵	۱۰۲۶	۱۰۲۷	۱۰۲۸	۱۰۲۹	۱۰۳۰	۱۰۳۱	۱۰۳۲	۱۰۳۳	۱۰۳۴	۱۰۳۵	۱۰۳۶	۱۰۳۷	۱۰۳۸	۱۰۳۹	۱۰۴۰	۱۰۴۱	۱۰۴۲	۱۰۴۳	۱۰۴۴	۱۰۴۵	۱۰۴۶	۱۰۴۷	۱۰۴۸	۱۰۴۹	۱۰۵۰	۱۰۵۱	۱۰۵۲	۱۰۵۳	۱۰۵۴	۱۰۵۵	۱۰۵۶	۱۰۵۷	۱۰۵۸	۱۰۵۹	۱۰۶۰	۱۰۶۱	۱۰۶۲	۱۰۶۳	۱۰۶۴	۱۰۶۵	۱۰۶۶	۱۰۶۷	۱۰۶۸	۱۰۶۹	۱۰۷۰	۱۰۷۱	۱۰۷۲	۱۰۷۳	۱۰۷۴	۱۰۷۵	۱۰۷۶	۱۰۷۷	۱۰۷۸	۱۰۷۹	۱۰۸۰	۱۰۸۱	۱۰۸۲	۱۰۸۳	۱۰۸۴	۱۰۸۵	۱۰۸۶	۱۰۸۷	۱۰۸۸	۱۰۸۹	۱۰۹۰	۱۰۹۱	۱۰۹۲	۱۰۹۳	۱۰۹۴	۱۰۹۵	۱۰۹۶	۱۰۹۷	۱۰۹۸	۱۰۹۹	۱۱۰۰	۱۱۰۱	۱۱۰۲	۱۱۰۳	۱۱۰۴	۱۱۰۵	۱۱۰۶	۱۱۰۷	۱۱۰۸	۱۱۰۹	۱۱۱۰	۱۱۱۱	۱۱۱۲	۱۱۱۳	۱۱۱۴	۱۱۱۵	۱۱۱۶	۱۱۱۷	۱۱۱۸	۱۱۱۹	۱۱۲۰	۱۱۲۱	۱۱۲۲	۱۱۲۳	۱۱۲۴	۱۱۲۵	۱۱۲۶	۱۱۲۷	۱۱۲۸	۱۱۲۹	۱۱۳۰	۱۱۳۱	۱۱۳۲	۱۱۳۳	۱۱۳۴	۱۱۳۵	۱۱۳۶	۱۱۳۷	۱۱۳۸	۱۱۳۹	۱۱۴۰	۱۱۴۱	۱۱۴۲	۱۱۴۳	۱۱۴۴	۱۱۴۵	۱۱۴۶	۱۱۴۷	۱۱۴۸	۱۱۴۹	۱۱۵۰	۱۱۵۱	۱۱۵۲	۱۱۵۳	۱۱۵۴	۱۱۵۵	۱۱۵۶	۱۱۵۷	۱۱۵۸	۱۱۵۹	۱۱۶۰	۱۱۶۱	۱۱۶۲	۱۱۶۳	۱۱۶۴	۱۱۶۵	۱۱۶۶	۱۱۶۷	۱۱۶۸	۱۱۶۹	۱۱۷۰	۱۱۷۱	۱۱۷۲	۱۱۷۳	۱۱۷۴	۱۱۷۵	۱۱۷۶	۱۱۷۷	۱۱۷۸	۱۱۷۹	۱۱۸۰	۱۱۸۱	۱۱۸۲	۱۱۸۳	۱۱۸۴	۱۱۸۵	۱۱۸۶	۱۱۸۷	۱۱۸۸	۱۱۸۹	۱۱۹۰	۱۱۹۱	۱۱۹۲	۱۱۹۳	۱۱۹۴	۱۱۹۵	۱۱۹۶	۱۱۹۷	۱۱۹۸	۱۱۹۹	۱۲۰۰	۱۲۰۱	۱۲۰۲	۱۲۰۳	۱۲۰۴	۱۲۰۵	۱۲۰۶	۱۲۰۷	۱۲۰۸	۱۲۰۹	۱۲۱۰	۱۲۱۱	۱۲۱۲	۱۲۱۳	۱۲۱۴	۱۲۱۵	۱۲۱۶	۱۲۱۷	۱۲۱۸	۱۲۱۹	۱۲۲۰	۱۲۲۱	۱۲۲۲	۱۲۲۳	۱۲۲۴	۱۲۲۵	۱۲۲۶	۱۲۲۷	۱۲۲۸	۱۲۲۹	۱۲۳۰	۱۲۳۱	۱۲۳۲	۱۲۳۳	۱۲۳۴	۱۲۳۵	۱۲۳۶	۱۲۳۷	۱۲۳۸	۱۲۳۹	۱۲۴۰	۱۲۴۱	۱۲۴۲	۱۲۴۳	۱۲۴۴	۱۲۴۵	۱۲۴۶	۱۲۴۷	۱۲۴۸	۱۲۴۹	۱۲۵۰	۱۲۵۱	۱۲۵۲	۱۲۵۳	۱۲۵۴	۱۲۵۵	۱۲۵۶	۱۲۵۷	۱۲۵۸	۱۲۵۹	۱۲۶۰	۱۲۶۱	۱۲۶۲	۱۲۶۳	۱۲۶۴	۱۲۶۵	۱۲۶۶	۱۲۶۷	۱۲۶۸	۱۲۶۹	۱۲۷۰	۱۲۷۱	۱۲۷۲	۱۲۷۳	۱۲۷۴	۱۲۷۵	۱۲۷۶	۱۲۷۷	۱۲۷۸	۱۲۷۹	۱۲۸۰	۱۲۸۱	۱۲۸۲	۱۲۸۳	۱۲۸۴	۱۲۸۵	۱۲۸۶	۱۲۸۷	۱۲۸۸	۱۲۸۹	۱۲۹۰	۱۲۹۱	۱۲۹۲	۱۲۹۳	۱۲۹۴	۱۲۹۵	۱۲۹۶	۱۲۹۷	۱۲۹۸	۱۲۹۹	۱۳۰۰	۱۳۰۱	۱۳۰۲	۱۳۰۳	۱۳۰۴	۱۳۰۵	۱۳۰۶	۱۳۰۷	۱۳۰۸	۱۳۰۹	۱۳۱۰	۱۳۱۱	۱۳۱۲	۱۳۱۳	۱۳۱۴	۱۳۱۵	۱۳۱۶	۱۳۱۷	۱۳۱۸	۱۳۱۹	۱۳۲۰	۱۳۲۱	۱۳۲۲	۱۳۲۳	۱۳۲۴	۱۳۲۵	۱۳۲۶	۱۳۲۷	۱۳۲۸	۱۳۲۹	۱۳۳۰	۱۳۳۱	۱۳۳۲	۱۳۳۳	۱۳۳۴	۱۳۳۵	۱۳۳۶	۱۳۳۷	۱۳۳۸	۱۳۳۹	۱۳۴۰	۱۳۴۱	۱۳۴۲	۱۳۴۳	۱۳۴۴	۱۳۴۵	۱۳۴۶	۱۳۴۷	۱۳۴۸	۱۳۴۹	۱۳۵۰	۱۳۵۱	۱۳۵۲	۱۳۵۳	۱۳۵۴	۱۳۵۵	۱۳۵۶	۱۳۵۷	۱۳۵۸	۱۳۵۹	۱۳۶۰	۱۳۶۱	۱۳۶۲	۱۳۶۳	۱۳۶۴	۱۳۶۵	۱۳۶۶	۱۳۶۷	۱۳۶۸	۱۳۶۹	۱۳۷۰	۱۳۷۱	۱۳۷۲	۱۳۷۳	۱۳۷۴	۱۳۷۵	۱۳۷۶	۱۳
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	----





سین بن داود
علیها السلام
معتق

مسلا سوار و رضاقن و رجا الغیب

یاقیادرح علیقا ملیقا انت تعلمو مانی قلوبهم
ملیقا انتا طو و نه علیقا ملیقا الوحا
الوحا الوحا الوحا الوحا الوحا
حضرت یوهنه الساعة الساعة
الساعة الساعة الساعة
الساعة الساعة

یبرکت بدو اشرف جهانگیر حاضر شود
و بسوزد در بر پادشاه و در وجود فلاں

۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲
۱۳	۱۴	۱۵	۱۶

بن فلاں مستولی شده باشند بخود روشن شدن فلیته خدا

بحق میکائیل

بحق جبرئیل

یابدو ح	یابدو ح	یابدو ح
یابدو ح	یابدو ح	یابدو ح


بحق بادشاه	یکتا نوس	بحق بادشاه سلیمان بن داود علیها السلام
مخروء لعین	شداد لعین	امان لعین
فرعون لعین	لعین صفو	جالت لعین
خبیث لعین	دقیانوس لعین	السلام و خاتمه

درین فلیته آمده سوخته گردد

بر پائے و بر نظرس که در وجود فلاں بن
فلاں و هر آیسے و هر دیوے و پیری و چرطی
و بر شے که در وجود فلاں بن فلاں
دخل کرده و نماز حق رسانیده باشد

بحق الساعة و الجبل و الوحا

کے اندر تیل میں خنوں معلوم ہوگا۔ اور جب خنوں معلوم ہوگا تو آسیب قتل ہو چکا اور دروازہ رفلٹیتہ والی صورت بنے تو جو جانے کہ آسیب رفلٹیتہ کو تکلیف دیتا ہے اور بری طرح سے اس کے پر آتا ہے تو یہی نقش جو لکھے ہیں بیٹھے تیل میں جلاوے اس کے روبرو امید ہے کہ آسیب بلاؤں کو اسی فلیٹہ میں دیکھ گیا اور اس فلیٹہ کو جب جلا دیا گیا تو سب بلائیں ابل جاویں گی اور رفلٹیتہ اچھا ہو جائیگا پھر لہو اچھا ہوئیے حضرات کرے یعنی پھولوں کو شہو دار اور مٹھائی کو کچھ پیسے ہو مرلیں سے منگوائے اور کچھ کو میٹھی وغیرہ سے پاک کر کے اور رفلٹیتہ کو غسل دیکر اسی جگہ بھلاوے اور مٹھائی پر نیاز تو کلکوں کی دے کر کچھوں کو تقسیم کرے اور کچھ کر مرلیں کے وارث عامل کو دیں وہ ماں کا دودھ ہے اور حلال ہے اور جاننا چاہیے کہ حضرات میں جو کچھ ممکن ہو مرلیں سے لیکر اپنے حلال صرف میں کرے اور نیاز تو کلکوں کی ضرورت ہو تو اسے اور یہ فلیٹہ آڑ یا یا ہو ایسا صاحب کو لکھا ہے اور اس کو جس وقت عمل میں لاویگا تو بہت لذت پاویگا اور اس فقرے لغض و عدا خیر کے لالچ میں اس کو لکھا ہے اور وہ فلیٹہ جو کہ تھلائے یہ ہیں۔

فرعون لعین	ابلیس لعین و درود	ہامان لعین	ہامان	ہوا
رہتا ابلیس		عنت ہوا	عنت ہوا	عنت ہوا
لعین مردود		جزل ابلیس لعین	جزل ابلیس لعین	جزل ابلیس لعین
فرعون	ہوا	ابلیس قار	ابلیس قار	ابلیس قار
ہوا	فرعون	ابلیس قار	ابلیس قار	ابلیس قار
ہوا	ابلیس لعین	ہامان	ہامان	ہامان
ابلیس لعین	فرعون	ہوا	ہوا	ہوا
فرعون	لعین ہامان	ہوا	ہوا	ہوا
ہوا	ابلیس لعین	فرعون لعین	فرعون لعین	فرعون لعین

بحق سلیمان بن داؤد بحق یا بلح بحق اصف بن برخیا
علیہا السلام اصحاب سلیمان علیہ السلام
یا ابیہا الناس بحق یا اسرافیل

بحق جبرئیل

فرع	۴۸۶	۵۰۰	۳۹۷	۴۹۳	۴۹۳
ن	۴۹۸	۴۹۳	۴۹۷	۴۹۳	۴۹۳
ن	۴۹۲	۴۹۵	۵۰۳	۴۸۸	۴۸۸
ہا	۴۵۰	۴۸۹	۴۹۱	۴۹۷	۴۹۷

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

زنا

یابد ۷

انت تعلم

مافی قلوبهم

۵۰۰

یابد ۷

علیقاً ملیقاً

شاد و فرخون

بمان ابلیس

۲	۱۵	۱۷	۱
۹	۷	۱۲	۱۲
۷	۱۱	۱۵	۸
۱۶	۲۰	۳	۱۳

بہن

بہن

بہن

بہن

یہاں تا ۴

مریض کا لکھ

الساعة الساعة الساعة

اور ترکیب زکوۃ دینے اس عزیمت کی ہے کہ ایک چل کوشت اور چینی کھانا پھوڑے اور ایک ہزار ایک سو مرتبہ روز و وقت مقرر کر کے ساتھ خوشبو اور عطر اور لوہا بان کے جو بکھیرے سلاک ٹھہرے اور اخیر روز نیاز مومکوں کی دلا کر تمام کرے پس عامل

دوسرا عمل جو شخص کس اس عزیمت کو اپنے پاس رکھے یا پھر کے گلے میں ڈالے یا بالائی گردن میں ڈالے تو جادو اور آسیب اور دیو اور پری وغیرہ سے امن میں رہے گا اور کچھ فقہان اسکو نہ پہنچا اور وہ یہ ہے

ط ۱۸۸۱۵ ۹۹۹ ح ۱۱۱ و امرھ مرلا اط ط وار یا حافظ ۱۱
یا حی یا قیوم تو انزلنا هذا القرآن علی جبل لکرا لیتہ خاشعاً متصدعاً
تبین تختیبتہ اللہ و تزلزل الامثال نصر بہا للناس تعلمہم یتفکرون
اللهم اسعف من له البلاد یصاحبہ حق و ینزل من القرآن ما هو
شیفاء و رحمة للمؤمنین و لا یزید الظالمین الا خساراً کہلا کہلا
کہلا ارحم ارحم ترحم عقد تو عقد تو فزین فزین ارجل ارجل
دو سرا فلیتم حضرت غوث قدس اللہ سرہ سے چاہیے کہ اس فلیتہ
کو مریض کے آگے رکھنے پر اور غیاب میں اور چراغ کو جلا دے کہڑے
تیل سے اور تیلوں کا تیل بھی جلا دے اور جو کچھ کھٹائی ہو اس پر نیاز
حضرت غوث رضی اللہ عنہ کی دلا دے اور بعد اس کے فلیتہ روشن
کرے جن اور دیو اور پری اور جو بلا کہ ہوگی دور ہوگی انشاء اللہ تعالیٰ
اور وقت جلانے فلیتہ کے یہ عزیمت پڑھے عزمت علیکم
و اقسمت علیکم یا عبد الصمد یا عبد الرحمن یا عبد الواحد
زود حاضر شو حضرت میری الدین قدس سرہ اور اس عزیمت کو دم کر کے اردوں
کو مریض کے مارے انشاء اللہ تعالیٰ جل کر خاک ہوگا اور فلیتہ صفحہ ۲۹
پر ملاحظہ ہو۔

لڑکے سے کہے آسیب ہے یا جادو ہے۔ فلیتہ یہ ہے۔

یا پطور یا ربوس یا بوسا یا	یا بنو یافور یا شداد	یا بنو ۷	یا ابلیس یا کائنات جس بحق طلیقا بلیقا خلیقا مخلوقا انت تعلم ما فی قلوبہم
۸	۲۹۴	۲۹۷	۱
۲۹۴	۲	۲۹۷	۲
۳	۲۹۹	۲۹۲	۶
۲۹۳	ع	ع	۲۹۸

اصوات ہرچہ در وجود
فلاں بن فلاں حاضر نمایند
و بسوزانند و خاکستر کنند

پھر اس لڑکے سے کہے کہ ہو کسوا روں کو بھیں کہ گرفتار کر کے لاویں اور دین مرتبہ لڑکا کہے کہ سب کو پابہ بنجیر کے لاویں تو بادشاہ حکم دیکھا اور ہوٹل آسیب کو لا دینے تو کہے کہ اس کو قتل کرو اور سب کو خست کر دے اور نیاز اور سامان سب خود لے دے۔
دوسرا یہ فلیتہ دیا ہوا ایک بزرگ کا واسطے آسیب زدہ کے شام کی وقت جلاوے

اور اس دل اس نشن مں اس ان لہ اس ان لہ اس ان لہ اس ان
اب اب دروغ ال ق و اس ساتھ اشران ناموں کے یہ بین ابلیس شدا و شدا
نمرو د اور نمرون اور مان اور قارون اور اچول سب بلا میں اور مرض کہ در و ہو
فلاں بن فلاں اس فلیتہ میں اور چرخ میں لایا میں اور جلا یا میں نے اور دور کہ
میں نے جہمت اھیاستوا اھیستوا پہلے کا مذکور تھا۔ ہم پر مرض کے طے اور یہ فلیتہ کہ
دوسرا طریقہ حاضر است اور فلیتہ کا تجزیہ کیا ہوا اور عمل شہرہ بزرگوں کا چاہیے کہ
لڑکا تشریف جس کی عمر باہ برس سے زیادہ نہ ہو غسل دے کر اور جگہ مٹی سے پاک کر کے
اور جو کچھ خوشبو اور تہہ بی کر ممکن ہو لاوے اور اس لڑکے کو پاک چادر جو تہی ہو اس پر
بھلائے اور مریض کو غسل کی طاقت ہو تو غسل دے اور جو طاقت غسل کی نہ ہو تو خیر کہ
کچھ لڑاک پہناوے اور نیا خنجر یا بیغیر خنجر اصلے اللہ علیہ وسلم اور غوث قدس سرہ کی
دسے کہ لڑکے اور مریض دونوں کو بھلاوے پھر فلیتہ لڑکے سے تیل میں جلاوے اور
لڑکے سے کہے کہ نگاہ فلیتہ پر رکھے اور عامل پہلے اپنے اور لڑکے اور چرخ کے
گرو حصار کر لے اور عزیمت پڑھے اور وہ یہ ہے عزیمت علیکد و اقصیت علیکد
ملکان سلطان الجن والانس احضروا احضروا من جانب المشارق و
المغرب والجنوب والشمال بحق سلیمان بن داؤد علیہما السلام بحق لا الہ
الا اللہ محمد رسول اللہ اس عزیمت سے سات مرتبہ حصار کرے اور آرد چاروں
طرف بھٹکے اور لڑکے کو بھی آرد مارے اور در و پڑھے پھر لڑکے کو فلیتہ میں بھسا کر
دینے والا دکھائی دیکھا اور فرشتہ بچانے والا سقہ لیں اس وقت عامل یا فلیتہ یا فلیتہ
کہنا شروع کرے کہ بادشاہ آوے گا اور اپنے نام اور پتہ کے ساتھ سلام کرے
اس طور سے کہ فلیتہ فلاں کا مرید یا شاگرد سلا م غلیظ اس کے بعد لڑکے سے
مطلب کہے کہ فلاں شخص کو میرض ہے کون شخص ہے جو تکلیف دیتا ہے جو بادشاہ

اور آئے میں گولی بنا کر دریا میں ڈالے تو حامل اُن کا ہو گا اور یہ نقش حاضر ات میں
کام آتے ہیں اور تجربہ کیے ہوئے ہیں اور وہ یہ ہیں۔

۵۵۹۲۸	۵۵۹۳۱	۵۵۹۳۳	۵۵۹۲۱
۵۵۹۳۲	۵۵۹۳۲	۵۵۹۲۷	۵۵۹۳۲
۵۵۹۲۳	۵۵۹۳۴	۵۵۹۲۹	۵۵۹۲۶
۵۵۹۳۰	۵۵۹۲۵	۵۵۹۲۷	۵۵۹۳۵

۷۸۶

۶	۱	۸
۷	۵	۲
۲	۹	۴

۷۸۶

۸	۱۱	۷	۱
۲	۲	۷	۱۲
۳	۱۶	۹	۶۰
۱۰	۷	۲	۱۵

آسیب کے معاملہ میں کچھ پیدا ہونے سے پہلے اس نقش کو لکھ کر مکان کی دیوار میں لگا دے
تو ہرگز چالیس روز کے اندر عورت کو نظر اور آسیب اور کچھ کوام الصبیاں وغیرہ نہ ہوں
گے اور یہ نقش عدد سورہ الم ترکیف کا ہے اور اس کو نشان تمہاری کہتے ہیں اور
ہر معاملہ میں کام آتا ہے

۱۶	۶۹	۱۶	۸۳	۱۶	۸۶	۱۶	۷۲
۱۶	۸۵	۱۶	۷۳	۱۶	۷۸	۱۶	۸۴
۱۶	۷۴	۱۶	۸۸	۱۶	۸۱	۱۶	۷۷
۱۶	۸۲	۱۶	۷۶	۱۶	۷۵	۱۶	۸۷

دوسرا جس شخص کے مکان میں پتھر یا اینٹ آتے ہوں یہ فلیتہ لکھ کر اور منہ اُس کا
کعبہ شریف کی طرف کر کے دیوار پر لگا دیوے ہرگز پتھر نہ اویسے اور وہ اگلے صفحہ پر ہے۔

دیا ہوا میرزا بن العابدین کا ہر وقت کام آتا ہے

تین سو تین
ابلیس لعین
عزود

ناروت
ابلیس لعین
ناروت

ناروت
ابلیس لعین
ناروت

ناروت
ابلیس لعین
ناروت

دوسرے تینوں نقش آسیب کے بارے میں مقرر کئے ہیں جو فلیتہ کی ضرورت نہ ہو
تو یہ نقش لکھ کر لہجوں کی ناک میں دھواں اور سبب بدن پر دے اور ٹونڈ کر کے گردن
میں ڈالے اور یہ نقش اکثر کام آتے ہیں مگر چالیس روز چالیس چالیس نقش لکھ کر

ہے اس پر نگاہ کرے اور عامل یہ عزیمت پڑھتا رہے اور ہرگز نہ درے پھر اس
مزیت کو پڑھ کر اگر پیر و کم کرے اور مریض کے سر پر مالے انشاء اللہ
تعالیٰ سیاهی میں آکر مریض کے سر پر مالے کرے کے سر پر حاضر ہوں گے عامل کو پھر
اختیار ہے کہ اس کو قید کرے خواہ قول و قرار سے کہ چھوڑ دے اور عزیمت جو پیر
جاوے گی وہ یہ ہے یا صابت الصفا یا جامع الاقتتات حجاز النبات یا
منشی القاب یا شاہ پری یا بدیع الجمال جو پیر سراج من
الاعظم اور وہ قلیتہ جو لڑکے کے ہاتھ میں دیں گے یہ ہے۔



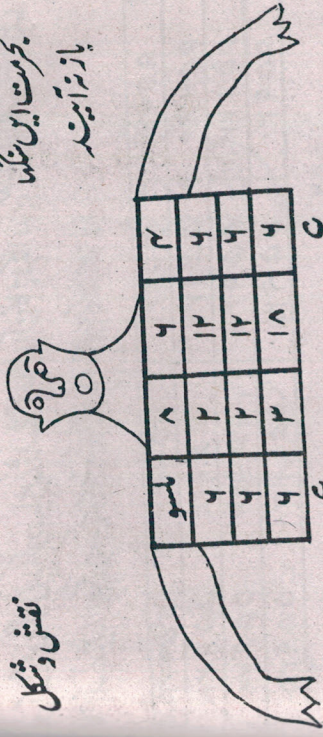
ماہن	۶ و	۳۱	۳۱
یابدوح	۱ ل	۵ ن	۱۱
یابدوح	۱ پ	۵ ن	۱۱
حاضر شوہ حاضر	۲ ع	۱۱	۱۱
انجل			
الساعة			

یا حور پری

دوسرا صورت دیکھ کر آسیب کو بچا تا یہ علامت مریض آسیب والے کو لکھ کر دکھلائے
جو آسیب کا خطر ہے تو دیکھتے ہی اس کے رونما شروع کرے گا اور جو خبیث ہے تو ہٹے گا

بحرمت اس سنگا
باز تہ آئینہ

نقش و شکل



۴۴

دوسرا اس واسطے کہیں آسیب آگ دے دیتا ہو یا کہ نہیں پھینکتا ہو تو چاہیے کہ
اس نقش معظم کو لکھ کر پانی کے نئے کوزے میں ڈالے اور اس نقش کو دھو کر چھت اور
جس جگہ مناسب خیال کرے پھر کے پھر برکت آسیب کا خطر نہ ہو گا اور وہ نقش یہ ہے۔

۱۲۵	۷	۱۲	۴	۵
۱۲	۷	۱۲	۴	۵
۱۲	۷	۱۲	۴	۵
۱۲	۷	۱۲	۴	۵
۱۲	۷	۱۲	۴	۵

دوسرے حاضران کہ جن میں جنات نظر آتے ہیں

چلیں کہ پہلے جگہ کو جی سے لیے اور مریض کو غسل دیوے جو غسل کے لائق ہو ورنہ
لڑکے کو غسل کرے اور لڑکا بالائے سر سے زیادہ کا نہ ہو اس کو غسل دیکر اور پیر ایک پہنا
کر پیر چادر بچھا دے اور جو کچھ ممکن ہو چلا دے اور اپنے اور مریض اور لڑکے
کے گرد حصار ابرسا صبر سا جو کہ اوپر لڑکا کرے اور تیناڑ مٹھائی پر انحضرت صلی اللہ علیہ
وسلم کی دیوے اور یہ قلیتہ لکھ کر لڑکے کے ہاتھ میں دیوے اور جس جگہ کہ یہاں بھی رہی ہوئی

اسد میں تجریدات و تربی میں لکھا ہے کہ جب کسی کو جون آزار دیتا ہو ان آیات کو
 یلوں پرے کر لکھ کر اسب زدہ کے گلے میں ڈالے جس سے زائل ہو جائیگا اور وہ
 آیات یہ ہیں **هَذَا يَوْمَ يَنْظُرُونَ وَلَا يُدْرِكُهُمْ فِتْنَةٌ رُحُونُ تَوْحِيدِ الْحَقِّ وَظِلِّ مَا**
كَانُوا يَعْمَلُونَ وَذَرِ الْفُتُولَ عَلَيْهِمْ غَمَاضٌ فَهُمْ لَا يَبْطِطُونَ حَمْدٌ عَسَى حَسِبْتَ
كَفَيْتُمْ فِتْنَةً عَقَدْتُ عَنْكَ يَا حَامِلُ كِتَابِي هَذَا الْبَسِطَةَ الْحَقِّي الْمُبْتَدِينَ
اِنِّي وَذَكَرْتُ بِالْفِخُولِ وَلَا تَوَقُّعًا بِاللَّهِ اَلْحَمْدُ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَعَلَى اٰلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ وَذِ اَفْرَاقَاتِ الْقُرْآنِ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوْبِهِمُ الدَّهَانَ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يَجَايِئُهمُ السُّعُورُ هَ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوْبِهِمُ الدَّهَانَ
لَيَقْفُوهُ وَاِذَا رَجَعُوا اِلٰى اَهْلِهِمْ وَاقَرُّوا عَلَيْهِمْ ذَكَرُوا فِي الْقُرْآنِ وَخَدَّاهُ وَتَوَكَّلُوا عَلَى
اٰدِبَادِهِمْ وَزَادَهُمْ نُفُورًا اَيْضًا جس کو جن نے ستایا ہوا اس پر ان آیات کو پڑ
 کرے اور پانی پھیرے اور دیکھے وہ یہ ہے **اِذَا قَالَ يُوسُفُ لِاَبِيهِ يَا اَبَتِ**
اِنِّي رَأَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ لَا يَكُونُ لِي سَاجِدٌ يَوْمَ
يُخْتَارُ الْحُجَّةُ اِنَّ اِلٰهِي اسْتَفْعَدُ اَنْ تَقْدُمَ اَمِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ اَلْاَرْضِ
فَاَنْقَضَ وَ اَلَا تُنْقَضُ وَاِنَّ اِلٰهِي سُلْطٰنٌ اَيْضًا سات عدد فلفل لے کر اور ایک ایک پر
 سات سات بار سورہ قریش و کرے اور پانی میں گھسکر آسب زدہ کی آنکھوں میں
 بطور ہرے کے لگا کرے **اَيْضًا** ہمارے علم فرماتے ہیں کہ جو کوئی اسم اللہ کو کسی طرف
 میں بلا لے اور جو قدر اس طرف میں گئی اس پر لکھ کر اور دھو کر اس کا پانی آسب زدہ
 پر چھڑک دے تو شیطان اس کا جل جاوے گا **اَيْضًا** خزانہ جلالی میں لکھنے کے روایت
 صحیح سے ثابت ہے کہ جو کوئی عہد نامہ جنیان کو اپنے پاس رکھے بھی ضرر نہیں ہو
 اور جادو وغیرہ سے بھی محفوظ رہے گا وہ یہ ہے **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** ہا محمد
 لِلّٰهِ الَّذِی خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ فَتَعْلَمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

لیٹا رہنے دے اور یہ احتیاط رکھے کہ ہاتھ نہ مارنے پاوے اور تینوں نقش یہ ہیں
 نقش اول

۳۵ ۴۷ ۴۹	۳۵ ۴۷ ۵۲	۳۵ ۴۷ ۵۴	۳۵ ۴۷ ۵۶
۳۵ ۴۷ ۵۵	۳۵ ۴۷ ۵۳	۳۵ ۴۷ ۵۸	۳۵ ۴۷ ۵۳
۳۵ ۴۷ ۵۴	۳۵ ۴۷ ۵۸	۳۵ ۴۷ ۵۰	۳۵ ۴۷ ۵۷
۳۵ ۴۷ ۵۱	۳۵ ۴۷ ۵۴	۳۵ ۴۷ ۵۵	۳۵ ۴۷ ۵۷

دوسرا نقش پینے کی واسطے

۱۵ ۳۲ ۲۲	۱۵ ۳۲ ۲۷	۱۵ ۳۲ ۳۰	۱۵ ۳۲ ۳۱
۱۵ ۳۲ ۲۹	۱۵ ۳۲ ۳۸	۱۵ ۳۲ ۳۳	۱۵ ۳۲ ۳۸
۱۵ ۳۲ ۱۹	۱۵ ۳۲ ۳۲	۱۵ ۳۲ ۲۵	۱۵ ۳۲ ۲۲
۱۵ ۳۲ ۲۶	۱۵ ۳۲ ۲۱	۱۵ ۳۲ ۲۰	۱۵ ۳۲ ۳۱

تیسرا نقش فلیتہ کرے یا چراغ میں لکھے

۱۸۵ ۴۲ ۲۲	۱۸۵ ۴۲ ۲۷	۱۸۵ ۴۲ ۳۰	۱۸۵ ۴۲ ۳۱
۱۸۵ ۴۲ ۲۹	۱۸۵ ۴۲ ۳۸	۱۸۵ ۴۲ ۳۳	۱۸۵ ۴۲ ۳۸
۱۸۵ ۴۲ ۱۹	۱۸۵ ۴۲ ۳۲	۱۸۵ ۴۲ ۲۵	۱۸۵ ۴۲ ۲۲
۱۸۵ ۴۲ ۲۶	۱۸۵ ۴۲ ۲۱	۱۸۵ ۴۲ ۲۰	۱۸۵ ۴۲ ۳۱

جان اسے عزیز کرے جو کچھ کہ عزیمت اور نقش آسب کے بارے میں تھے یہاں لکھے گئے
 انصاف کرتا کہ عملیات کو کس قدر صاف اور ظاہر کرنے کی رویت ہے کہ کوئی عامل ایسی رو
 کو نہیں دیتا ہے پس اس غیر کو دعا کے تحریر سے یاد کرنا کہ میرا حق یہی ہے

نقش سورہ ناس یہ ہے

۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

نقش سورہ ناس یہ ہے

۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

ایضاً ان دونوں نقشوں کو چینی کی رکابی پر مشک و زعفران و گلاب سے لکھ کر دھوکہ
میں و شام سجور کو پلاوے ایک نقش یہ ہے

۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

ایضاً ان دونوں نقشوں کو چینی کی رکابی پر مشک و زعفران و گلاب سے لکھ کر دھوکہ
میں و شام سجور کو پلاوے ایک نقش یہ ہے

۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

یہ ہے بسم اللہ الرحمن الرحیم علیاً ملیکاً خالقاً مخلوقاً کافراً شافراً رافعاً
مرفعاً جباراً کابراً ذلیل من القدران ما هو شفاء ورحمة للمؤمنین
ولا یزید الا خساراً یحیی اشیاء کما لا یحیی الا شیء الا ان یشاء
میں لکھا ہے کہ واسطے دفعِ حشر کے چالیس روز تک میں تو سب بار ہر روز یہ
ایہ کریم پڑھے انا جعلنا فی اذانہم غللاً فیہی الی الا قرآن فہم
مفقحون وجعلنا من بین یدینہم سداً و من خلفہم سداً
فاغشینا ہمو فہم لا یبصرون اور لکھ کر محو کی کریں باندھے۔ ایضاً حضرت
علی کریم اللہ و جہ سے ابواللیث نے روایت کی کہ جس کسی کو جس جگہ جاوے جو چاہے
تو ان آیات کو پالی پر کر کے پیل پر ڈال دیا کریں خدا جیسے شفا ہووے
فلما اتقوا قال موسیٰ ما جئتہ بہ اسطرۃ ان اللہ سیبطلہ ان اللہ
لا یضل عمل المسدین و یحق اللہ الحق بکلمتہ ولو کون الجحوم
فوق الحق و یقل ما کانوا یفکون فکانوا ہمالہ و القلوب اصغر من ذل
استحوک سجداً یقولوا انما یوت الخبیر رب موسیٰ و ہرون انہما
سعدا کید ساجد لا یفلح الشاخر حین انی ایضا قول الجلیل میں شاہ ولی
الہد بلوی نے لکھا ہے کہ تینیس آیتیں ہیں کہ جاوے کے ترک و دفع کرنی ہیں چار
آیتیں سورہ بقرہ اول سے اور آیت الہدیٰ اور دو آیتیں اسکے بعد کی خالد و نون تک
اور تین آیتیں سورہ بقرہ یعنی و ان تبدل و ما فی النفسک سے آخر تک اور تین
آیتیں سورہ اعراف کی آیت ربکم سے مجتہد تک اور سورہ بنی اسرائیل کی پہلی
آیت یعنی قل ادعوا اللہ او ادعوا السکن آخر تک اور دس آیتیں صافات کی
اول سے لایز تک اور دو آیتیں سورہ حن کی یا معشر الجحہ سے تنقیہ ان
تک اور آخر سورہ حشر کو انزلنا سے آخر تک اور دو آیتیں سورہ جن کی قل

اس کو گلے میں ڈال دے حکم خدا نصیحت و رحمت کا اثر زائل ہو جائے گا۔ نقش یہ ہے چاندی کی تختی پر یہ نقش اگر کندہ کر کے بچوں کے گلے میں ڈال دیا جائے تو وہ ۵۰ نظر بد اور آسیب سے محفوظ رہتے ہیں... اسپیڈ لہوہ مکان - اگر کسی مکان میں ارواح خبیثہ کا اثر ہو تو اسکے چاروں گوشوں میں اذان دینا تجرب ہے

۲	۹	۲
۳	۵	۷
۸	۱	۶

فرمودہ حضرت خواجہ محمد سلیمان پتی تونسوی

سلسلہ عالیہ نظامیہ کے مشہور بزرگ حضرت خواجہ محمد سلیمان تونسوی ددر مرزا انوار کے ایک مرید کی اہلیہ کو جن کا خلل تھا اس کی والدہ نے حضرت کی خدمت میں عرض کیا۔ فرمایا کہ یا شیخ عبدالقادر جیلانی! ششیا تہ تین مرتبہ مرہفہ کے دونوں کانوں میں دم کریں اگرچہ کاترہ ہے تو دم کرنے سے زور زیادہ ہو گا اور اگر کوئی دوسرا مرض ہے تو شفا ہو جائے گی۔ اس کی والدہ نے اسی طرح کیا مریض زیادہ تر ہوا اس نے خدمت اقدس میں حاضر ہو کر مرہفہ کی حالت بیان کی۔ ارشاد فرمایا کہ سوزہ جن پر دم کر لیتے ہو دم کبھی چہنا چہ سوزہ تریف کے پڑھنے سے جن بھال گیا۔

اسمائے اصحاب کہف

حضرت اصحاب کہف کے اسمائے متحرک و رخ آسیب و رخ فجار کیلئے تجرب ہے حسب ذیل نام لکھ کر مرہفہ کے گلے میں ڈالے یا پانی میں گھول کر پلانے الھی جرمیت علیہا کسملینا کشفو طاب تبلیرو نس اذرقط یونس۔ کشاخط یونس۔ یوا نس یومین و کلیمہم قطیر۔ (تتم شہد)

آگیا!

آگیا!!

آگیا!!!

جہات و ہرما و آپ کی کمی میں

عملیات کی بنیادیں پل پلانے والی جہاتیں

- عملیات آسیب (تخیر جنات)
- عملیات تیر محبوب (عبدالرحمن)
- عملیات محبت
- کالا جادو (عرف قانون محبت)
- آئینہ عملیات (اندر جال)
- اسم اعظم جلد
- ہمیں بنگال کا جادو

آئینہ طلسمات و عملیات سمورہ - ۱۵/

اس نے علاوہ ہر موضوعات کی دوسری اور کتابوں کے ملنے کا پتہ

جسیم بنگلہ پور، اردو بازار،

قلعہ مسجد دھلا